शब्द-चित्र

किशोर

❑ मुरलीधर गुर्जर

बच्चे सामान्यत: अपने लाड़-दुलार भरे घरेलू परिवेश से स्कूल आते हैं । आरंभ में ही वे शिक्षक को अपने पारिवारिक वयस्कों - मां - पिता, बड़े भाई बहिन की तरह देखते हैं और उनसे स्नेह और वात्सल्य की अपेक्षा रखते हैं । यह शब्द चित्र इस ओर हमारा ध्यान आकर्षित करता है और बताता है कि शिक्षक का स्नेहिल व्यवहार बच्चे के सीखने को बाधित नहीं करता बल्कि सीखने की प्रक्रिया को और जीवंत और स्फूर्त करता है। लेकिन इसका क्या हो कि हमारे घर-परिवारों में ही बच्चों के लिए स्नेह और अवकाश के स्रोत निरंतर सूखते जा रहे हैं ?

दीदी यहां बैठ, दीदी यहां बैठ ! आवाजों के बीच दीदी का चकरा जाना स्वाभाविक ही था कि वह कहां बैठे क्योंकि मासूम निर्मल मनों की मीठी आवाजें दीदी से टकरा रही थीं । किस को दु:खी करे और किस को संतुष्ट ? क्योंकि यह उसका पिछला अनुभव था कि वह जिसके पास नहीं बैठेगी वही चेहरा बिगाड़कर दु:ख अथवा रोष प्रकट करने लगेगा ।

उनमें कुछ बच्चे ऐसे भी होते जो दीदी को सोचने का मौका कम ही देते और तपाक से उठकर उसके हाथों को पकड़कर खींचने लगते । यदि वे दीदी को अपनी जगह पर बैठा नहीं पाते तो क्या हुआ, वे दीदी (शिक्षिका) जहां भी बैठती उसके पास जरूर बैठते। उनमें से एक था किशोर जो दीदी के पास बैठने तक से ही सन्तुष्ट न होकर और स्नेह पाने की कोशिश करता । उसने कभी यह नहीं सोचा होगा कि यह महिला अपने परिवार की सदस्या न होकर दूर दराज के गांव-शहर से है । वह इसके साथ वैसा ही व्यवहार करता जैसा मां, बहिन और पिता के साथ किया जाता है । पता भी कैसे लगे क्योंकि यह एक छोटी सी ढाणी, जो मोत्याणी के नाम से जानी जाती है, में जन्मा और अपने परिवार के सदस्यों के अलावा बाहर के व्यक्तियों के संपर्क में कभी आया नहीं । न तो कहीं बाहर घूम पाया, न किसी ऐसे विद्यालय में ही पढ़ने जा पाया था जो उसको एक शिक्षक का रूप दिखा पाते ।

उन्हीं दिनों दिगन्तर विद्यालय उसी ढाणी के पास संचालित हुआ जिसमें पढ़ाने के तौर तरीके और बच्चे व शिक्षक का आपसी संबंध अन्य परंपरागत विद्यालयों से काफी भिन्न है । किशोर ने यहां अध्ययन करना शुरू किया । इसमें गीत-कविताओं, खेल कूद नाटक आदि के साथ पढ़ाई शुरू की जाती, भयरहित वातावरण में बच्चों से शिक्षक मित्रवत व्यवहार रखते । न कोई कुर्सी और न कोई डन्डा । गोल घेरे में शिक्षक व बच्चे बैठते और सहज रूप से पढ़ाई हो जाती शुरू । ऐसे वातावरण में किशोर शिक्षिका को परायी माने भी कैसे ?

वह कभी कभी दीदी की गोदी में बैठता तो कभी पास में खड़ा होकर मुंह पास ले जाकर मां जैसा प्यार पाने की कोशिश करता । उसका यह लगाव शाला चलती तब तक ही सीमित नहीं था । बच्चों की छुट्टी के बाद दूसरे दिन योजना बनाने, वर्कशीट तैयार करने, कॉपियां चैक करने के समय भी वहीं बैठा रहता और दीदी को घर ले जाने की जिद्द करता । वैसे उसका घर शाला के पास में ही था । जब शिक्षिका उनके घर जाती तो वह काफी खुश नजर आता ।

लेकिन समय के साथ परिस्थितियां बदलती हैं । जो इस मामले में भी हुआ कि दीदी इस शाला को छोड़कर दूसरी जगह चली गई । छोड़ गई किशोर का साथ जो उसने कभी भूलकर भी नहीं सोचा होगा । पर जो सोचते हैं वह नहीं होता और जो हो जाता है उसको भूलना भी पड़ता है ।

उसकी जगह एक शिक्षक आए । किशोर ने उनसे वही अपेक्षाएं रखीं । वह उनके हाथों से झूलता, उनके साथ खेलता, उनके पास बैठता । पर छूट गयी आदत मुंह के पास मुंह ले जाने की, हुआ यूं कि उस शिक्षक के दाढ़ी थी । तो जब भी किशोर दाढ़ी के पास जाता यह उसके मुंह के चुभती तो वह निष्कपट मन से कहता रामलाल जी आप इस दाढ़ी को कटवा क्यों नहीं देते ? आखिरकार किशोर की वह मुंह के मुंह लगाकर बात करने की आदत छूट गयी ।

एक साल बाद वह धरती समूह से आसमान समूह में आया*। वहां पर अधिकतर बच्चे उससे उम्र व शारीरिक दृष्टि

से भारी पड़ते थे । आसमान समूह के शिक्षक के साथ इसकी उतनी घनिष्टता नहीं थी जितनी धरती समूह के शिक्षक के साथ थी । अत: उसकी शिक्षक के पास बैठने की प्रवृत्ति में काफी कमी आ गयी । यह कमी उसकी इच्छा से नहीं बेबसी के तौर पर आयी थी, क्योंकि उस समूह में, शिक्षक के पास बैठने व अपनी वाचालता वाली क्षमताओं के उपयोग का भरपूर मौका नहीं मिल पा रहा था । हालांकि शिक्षक बच्चों के साथ समान व्यवहार करता पर किशोर उससे संतुष्ट नहीं था। और धीरे-धीरे उसकी पास बैठने की आदत में काफी कमी आ गयी ।

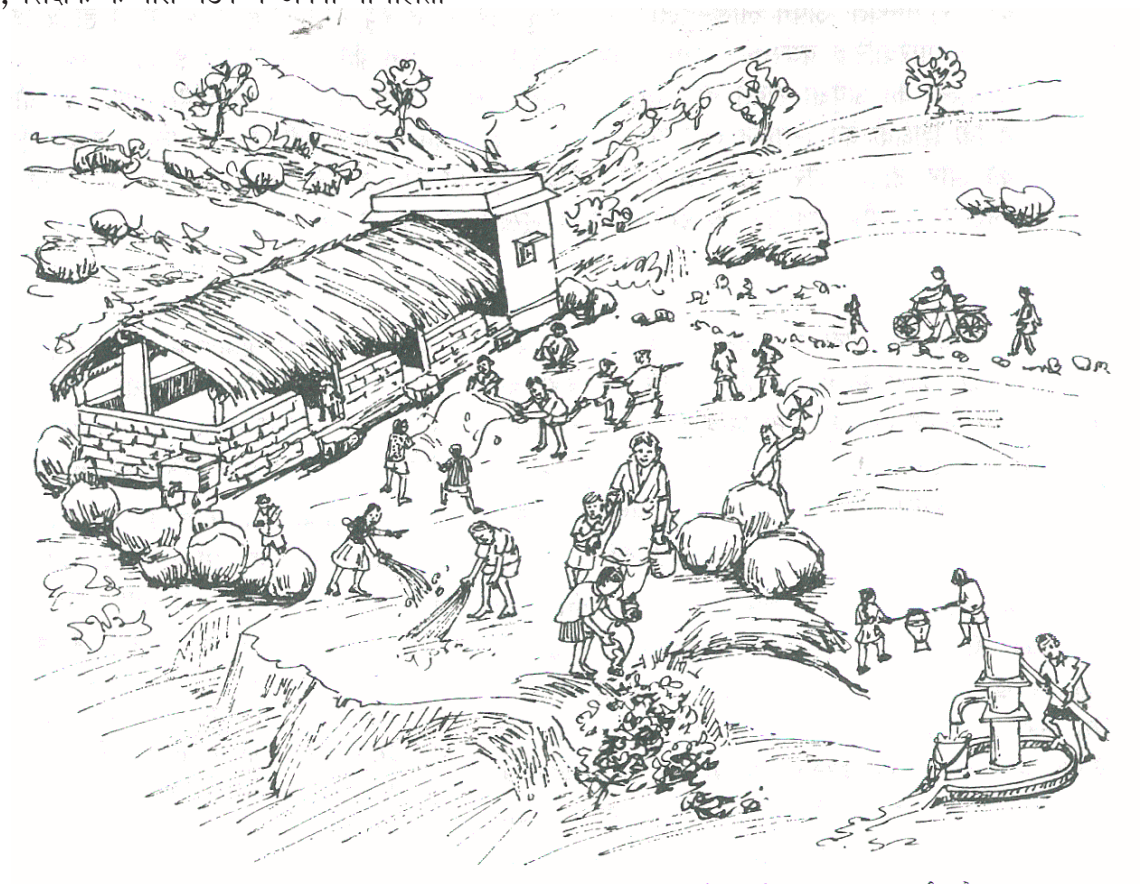

एक वर्ष बाद उसको फिर आगे वाले समूह में भेज दिया गया*। वहां भी उसको पहले वाले समूह की तरह समस्याओं से जूझना पड़ रहा था। कभी वह कोई हरकत या शैतानी कर भी देता तो उससे बड़े बच्चे उससे बात करते अत: इस प्रकार परिस्थितियों के चलते उसकी शुरुआती चंचलता में काफी बदलाव आ गया । पर यह बात आज की न होकर पिछले चार वर्षों पूर्व की है । आज इसकी उम्र 9 वर्ष है, छोटे कद, गोलमोल चेहरे वाला किशोर दूसरों को रिझाने वाली मुस्कराहट के साथ ही गुस्से को कभी पास नहीं आने देता । सभी साथियों की जबान पर उसका नाम बिना किसी घृणा व राग द्वेष के निकलता रहता है जिसका कारण उसका मिलनसार व्यक्तित्व है ।

जिस प्रकार उसका मन साफ है उसी प्रकार तन की साफ सफाई का भी वह ध्यान रखता है । अपनी लाल पेंट और पीली शर्ट या पीली पेंट और धारीदार बुशर्ट को समय-समय पर धुलवाना, प्रेस करवाना और अन्डर शर्टिंग करके पहनना उसकी एक खूबी सी बन गयी है । रोजाना सवेरे स्नान करना या हाथ पैर धोकर बालों में तेल डालकर कंघी करना जूते ओर अक्सरतया जुराब पहनकर शाला में आना उसकी आदत में निहित है ।

पर जिस प्रकार वह स्वयं की सफाई का ध्यान रखता है उसी प्रकार शाला की साफ-सफाई में भी अपनी जिम्मेदारीनुसार जुट जाता है । वर्तमान में शाला उसकी ढाणी से लगभग एक किलोमीटर दूर अरावली पर्वत शृंखलाओं की तलहटी में खो रैबारियान (ढूंढा)नामक जगह पर स्थित तीन छप्पर व एक कमरे में संचालित है । जहां यह बालक वर्षा समूह में अध्ययनरत है।

इस समूह में यह गत वर्ष ही अया है । और तब से ही

*यहां ऐसा लग रहा है जैसे एक कक्षा से आगे वाली कक्षा में भेज दिया गया हो । यह शिक्षक के मन में समूहों का कक्षा के रूप में स्थिर हो जाने का संकेत भर है । वास्तव में दिगन्तर के समूह कक्षा जैसे नहीं हैं । एक ही समूह में विभिन्न स्तरों पर पढ़ाई करने वाले बच्चे होते हैं । कई बार समूह में बच्चों के बीच स्तर भेद अत्यधिक हो जाने के कारण समूहों का पुनर्गठन किया जाता है । इस पुनर्गठन में कुछ बच्चे जो बहुत आगे चल रहे हों, अत: एकाकी हो गये हों, उनको ऐसे समूह में भेज दिया जाता है जिसमें उनके स्तर के आस-पास के बच्चे हों । यहां यही हुआ लगता है ।

यह बालक मेरे से जुड़ा हुआ है । मैंने इसमें कई तरह की चीजें देखी। जब समूह में विषयों के काम को कापियों में करवाया जाता तो यह एक कालांश में 5-7 लाइन ही लिख पाता और काम करना बंद करके बैठ जाता । जब मैं इससे पूछता कि भई किशोर,

काम करना बंद क्यों कर दिया ? तो इसका बेबाक उत्तर होता कि हाथ दुखने लग गए । तो कभी कहता मन ही नहीं लग रहा है । कभी इसका उत्तर होता समझ में नहीं आ रहा है । मैं करूं भी क्या? सही बात है समझ में नहीं आ रहा हो तो करे भी कैसे ? मैं उसको समझाता तो फिर वह काम करने लग जाता । धीरे-धीरे मैंने इसको समझने की कोशिश शुरू की जिसमें मेरा ध्यान इस तरफ भी गया। यह बालक शुरू से ही चंचल रहा है और ऐसे बालक शिक्षक से कुछ विशेष अपेक्षाएं लेकर चलते हैं । इनमें एक बात यह भी है कि वे येन-केन प्रकारेण शिक्षक का ध्यान अपनी ओर आकर्षित रखना चाहते हैं । तो हो सकता है इसके लिए यह लापरवाही करने, काम नहीं करने जैसे तरीके अपनाने लगा हो।

तो मैंने उसकी बातों पर विशेष ध्यान देना शुरू किया । लंच में, सुबह, शाम उसके साथ बात करना शुरू किया । उसको लगने लगा कि शिक्षक मेरी बातों को महत्त्व देते हैं । मेरी बातों को सुनते हैं । शिक्षक की निगाह में मेरी गिनती है। तो इसका फायदा मुझे दिखाई देने लगा । उसकी रुचि शिक्षण कार्य और शाला की अन्य गतिविधियों में बढ़ने लगी ।

नतीजा यह हुआ कि यह अपनी समझ से काम करता हुआ विषय ज्ञान में अपने स्तर के बच्चों से काफी आगे निकल गया ।

इस वर्ष यह प्राथमिक क्षमताओं पर काम कर रहा है । इसमें यह अपने आपको अन्य बच्चों से आगे किए हुए है । यह अधिक रुचि, लगन व मेहनत से काम करते हुए अपनी समझ के आधार पर आगे बढ़ रहा है और अपनी क्षमताओं को दिखाने की भावना रखते हुए अपने साथियों को आगे होकर समझाता है, चर्चाओं में रुचि के साथ भाग लेता है। किसी बिन्दु पर बनी समझ को आगे होकर बताता है । समूह में पूछे गये मौखिक प्रश्न या सवाल को बारी न होते हुए भी बताने जैसी प्रवृत्ति रखता है । साथ ही शैक्षणिक कार्य में समूह का नेतृत्व करने की पूरी इच्छा रखता है। पर साथ ही जानने व समझने की जिज्ञासा भी।

जब भी समूह में चर्चा चलती, चर्चा के बीच-बीच में या जब भी पूछने का समय मिलता, इसकी तरफ से चर्चा में क्यों और कैसे वाले सवाल खड़े हो जाते । इनमें से मुझे भी कुछ प्रश्नों का उत्तर अच्छी तरह से नहीं आता तो यह कहना पड़ता कि कल बताऊंगा । किसी से समझकर या पुस्तक में देखकर आऊंगा । पर उसका वह सवाल कल भी तैयार रहता। पर कुछ प्रश्न ऐसे होते हैं जिनका कोई माकूल जवाब मैं नहीं दे पाता । जैसे एक बार विज्ञान के कालांश में वायुदाब पर चर्चा चल रही थी । उसमें उसका प्रश्न था कि यह हवा पृथ्वी पर ही क्यों है । चन्द्रमा पर क्यों नहीं ? ऐसे प्रश्न यही नहीं और भी हैं ।

इस प्रकार कई तरह की खूबियां रखते हुए किशोर अपनी छोटी सी ढाणी में अपने माता-पिता एवं भाईयों व अन्य पारिवारिक बुजुर्गों को मोहित करते हुए सभी का स्नेह पा रहा है । वैसे इनके पास जमीन है । पर पानी की कमी से खेती नहीं कर पाते हैं । यह सात भाई और एक बहिन हैं । तीन भाई पढ़ते हैं, अन्य जयपुर में काम करने जाते हैं । पिताजी वृद्ध हैं। इसके ताऊजी के भी तीन-चार बच्चे हैं । यह एक संयुक्त परिवार है ।

शाला में पढ़ने जाने के अलावा किशोर पुस्तकीय काम को कॉपी में करने, ढाणी के आस-पास खाली खेतों में भैंस-बकरियां चराने, खेलने, टी.वी. देखने आदि कई तरह के कामों में अपने बाकी समय का उपयोग करता है ।◆